संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक : ०१ ● ०२ जनवरी २०१८ माघ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मना

डॉ0 धीरज सिंह, सभा प्रधान

२४ दिसम्बर को आर्य समाज बल्देव आश्रम खुर्जा में श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाया गया प्रातः यज्ञ के पश्चात् श्रीयुत् घनश्याम दास जी की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि श्री डॉ० धीरज सिंह का प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ रहे।

प्रधान जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के विषय में संस्मरण सुनाये तथा आर्य समाज का कार्य करने की प्रेरणा दी। संयोजन रामस्वरूप सिंह आर्य ने किया। क्षेत्र के आर्यों की उपस्थिति में बलिदान दिवस कार्यक्रम से लोगों को प्रेरणा मिली। आर्य कन्या डिग्री कालेज आर्य कन्या इण्टर कालेज एवं दयानन्द विद्यालय में भी स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान की घटनायें सुनाकर बच्चों में देश भक्ति एवं राष्ट्रसेवा के संस्कार प्रदान किये गए।

आर्य समाज खुर्जा के अधिकारी इसके लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

आर्यों का कुम्भ मेला

गुरूकुल आमसेना की स्वर्ण जयन्ती समरोह सम्पन्न

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा मन्त्री

२३, २४ एवं २५ दिसम्बर २०१७ को गुरूकुल के प्रांगण में समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इसका शुभारम्भ योगीराज स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के करकमलों से हुआ, यज्ञशाला का भव्य उद्घाटन–चतुर्वेद पारायण यज्ञ उसमें किया गया, डा० सोमदेव जी शास्त्री ब्रह्मा बने। वेदपाठी गुरूकुल के ब्र० रहे। माता परमेश्वरी देवी जी के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण हुआ तथा विशाल पण्डाल में सम्मेलन का उद्घाटन समारोह के रूप में मनाया गया, जिसमें मंच पर स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी संस्थापक सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, डा० सोमदेव जी शास्त्री मुख्य अतिथि ज्वलेड राम जी केन्द्रीय मन्त्री, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती सांसद सीकर की अध्यक्षता में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बसन्त पण्डा जी विधायक, डा० प्रशस्य मित्र शास्त्री राष्ट्रपति पुरस्कृत विद्वान् का प्रभावशाली वक्तव्य रहा संयोजन स्नातक वीरेन्द्र शास्त्री जी ने किया।

मध्याह्नोत्तर वेद सम्मेलन का आयोजन स्वामी रामवेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें कन्या गुरूकुलों की आचार्यों में सुश्री वेद विदुषी सूर्या देवी चतुर्वेदा, आचार्या राजन् मान, पवित्रा वेदालंकार, नन्दिता शास्त्री, अन्नपूर्णा जी, आचार्या धरणा जी, माता शन्नो देवी, पुष्पांजलि जी, डा० सोमदेव जी, महावीर मींमासक जी

शेष पृष्ठ ६ पर

आर्य समाज अमरोहा द्वारा रजाई वितरण समारोह

श्री मा0 सत्यप्रकाश आर्य का जन्म शताब्दी समारोह एवं आर्य नेता वीरेन्द्र आर्य, सुशीला आर्या पुत्र भारतेन्दु आर्य की स्मृति में

२६ दिसम्बर बुधवार को प्रातः ६ बजे से स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ का आयोजन हुआ। मुख्य यजमान आर्य समाज के मन्त्री आर्पेन्द्र कुमार आर्य रहे उनके पिता एवं माता जी तथा भाई की स्मृति में यज्ञ किया गया तथा विनय प्रकाश आर्य के पूज्य

शेष पृष्ठ ६ पर

अन्तरंगाधिवेशन सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक–27 जनवरी, 2018 दिन–शनिवार (माघ शुक्ल दशमीं) को प्रातः 11.00 बजे से संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा, नारायण स्वामी भवन, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में प्रधान/का0 प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगी।

एजेण्डा एवं विस्तृत विषयों की रूप–रेखा सभी को डाक द्वारा भेज दी गई है। कृपया समय से उपस्थित होकर अधिवेशन को सफल बनायें।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मन्त्री

वार्षिक बृहद् अधिवेशन की सूचना

सम्माननीय सभी पदाधिकारीगण, अन्तरंग सदस्य, सभी आर्य समाजों, जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं अन्य आर्य संस्थाओं के माननीय प्रतिनिधिगण को सूचित किया जाता है, कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक 28 जनवरी,2018 दिन रविवार (माघ शुक्ल एकादशी) को प्रातः 11.00 बजे से प्रधान/का0 प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, नारायण स्वामी भवन, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि नियत तिथि, समय व स्थान पर पहुँचकर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा मन्त्री
मो: 09837402192

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

जाधव की मां और पत्नी की जूतियों से क्यों घबराया पाकिस्तान?

पाकिस्तान ने कुलभूषण जाधव की मां और पत्नी के साथ अपमान जनक व्यवहार विश्व को शर्मशार करने वाला कारनामा कर दिखाया है। इस कुकृत्य के लिए खुदा भी पाक को माफ नहीं करेगा। इस मुलाकात से पहले पाक अफसरों ने अपने कूकृत्य को छिपाने के लिए चूड़ी, बिन्दी, मंगलसूत्र व जूतियां तक उतरवाकर अपने कब्जे में ले लिया। पाक की मनमानी के चलते कुलभूषण की मां और पत्नी को कपड़े तक बदलने के लिए विवश किया गया। मानवतावादी चेहरा पेश करने की कोशिशों में जुटे पाक ने हर कदम पर मानवीयता का माखौल उड़या।

मातृ भाषा मराठी में जैसे जी बात शुरू की इन्टरकॉम बन्द कर दिया गया। पाक जेल में नजायज तरीके से बन्दी बना कर रखे गये कुलभूषण जाधव एकाएक बेचैनी से अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए। मुलाकात के लिए पहले से समय तय होने के बावजूद पाकिस्तान अपने किए गये वादे से मुकर गया। पाक का असली चेहरा उस समय भी खुल कर दुनिया के सामने आ गया। जब जाधव की मां और पत्नी से मुलाकात के दौरान बीच में शीशे की दीवार खड़ी कर दी गयी। पाक की इस करतूत के लिए पूरे दुनियां भर में निन्दा झेलनी पड़ रही है। पर बेशर्म पाकिस्तान पूरी दुनियां के सामने अपनी बेशर्मी दिखाने से बाज नहीं आ रहा है। वह अपनी किए कुकृत्य को छिपाने के लिए अनर्गल बयानबाजी कर रहा है।

मुलाकात के बाद जाधव की मां व पत्नी को चूडी– बिन्दी, मंगलसूत्र तो वापस कर दिए गए। पर जूतियां नहीं लौटाई गई। परिजनों ने सपने में भी यह कल्पना नहीं की थी कि उन्हें जाधव को छूने तक का मौका नहीं दिया जायेगा। मां– पत्नी शीशे की की दीवार देखकर मायूस रहे दूसरी तरफ कुलभूषण का चेहरा देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह पाक के बेहद दबाव में है। उसे सच बोलने से बलपूर्वक रोका जा रहा है। हमारे देश की बहादुर मां ने अपने बेटे को ढांढस बढाते हुए सच पर टिके रहने का सन्देश दिया। कहा कि दबाव कितना भी पड़े पर वह पाक के गलत इरादे को कामयाब नहीं होने दे।

विश्व जगत में हो रही किरकिरी से पाकिस्तान ने सफाई देना शुरू कर दिया है कि जूतियों में जासूसी उपकरण लगे थे, इस लिए उसे फोरेन्सिक जांच के लिए भेजा गया है। सच तो यह है कि पाप परस्त पाकिस्तान जाधव की मां और पत्नी के जूते से अनायास ही नहीं डरा है। अगर वह सही होता तो इस मुलाकात की निष्पक्ष तरीके से वीडियों बनाकर पूरी दुनिया के सामने पेश कर मानवता की मिशाल पेश करता। पर उसने ऐसा नहीं किया इसकी वजह साफ है कि उसकी कथनी और करनी में *जमीन आसमान का* अन्तर है।

पाकिस्तान मीडिया भी अपने देश की काली करतूत को छिपाने के लिए अपने दायित्यों को विसरा दिया है। पाकिस्तान के ज्यादा अधिकांश समाचार पत्र, टी.वी., बेवसाइट और मीडिया संस्थान, अपनी सरकार की ही भाषा बोल रहे हैं। उनके इस पक्षपात पूर्ण कदम से विश्व जगत में छवि धूमिल हो रही है। पाकिस्तान के दा इन्टरनेशनल न्यूज ने पाक की डिप्लोमेशी की तारीफ की है, उसकी यह तारीफ बिना सिर पैर वाली है।

पाकिस्तान चाहे जितनी सफाई पेश करे पर उसका असली चेहरा इस दुनियां के सामने एक बार फिर से उजागर हो चुका है। उसे आने वाले समय में इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।

– सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्थ समुल्लासारम्भः

अथ समावर्त्तनविवाहगृहाश्रमविधिं वक्ष्यामः

प्रश्न- हम को नियोग की बात में पाप मालूम पड़ता है।

उत्तर- जो नियोग की बात में पाप मानते हो तो विवाह में पाप क्यों नहीं मानते? पाप तो नियोग को रोकने में है? क्योंकि ईश्वर के सृष्टिक्रमानुकूल स्त्री पुरूष का स्वाभाविक व्यवहार रुक ही नहीं सकता, सिवाय वैराग्यवान् पूर्ण विद्वान् योगियों के। क्या गर्भपातनरूप भ्रूणहत्या और विधवा स्त्री और मृतकस्त्री पुरुष के महासन्ताप को पाप नहीं गिनते हो? क्योंकि जब तक वे युवावस्था में हैं मन में सन्तानोत्पत्ति को पाप नहीं गिनते हो? क्योंकि जब तक वे युवावस्था में हैं मन में सन्तानोत्पत्ति और विषय की चाहना होने वालों को किसी राजव्यवहार वा जातिव्यवहार से रुकावट होने का एक यही श्रेष्ठ उपाय है कि जो जितेन्द्रिय रह सकें विवाह वा नियोग भी न करें तो ठीक है। परन्तु जो ऐसे नहीं हैं उनका विवाह और आपत्काल में नियोग अवश्य होना चाहिये। इस से व्यभिचार का न्यून होना, प्रेम से उत्तम सन्तान होकर मनुष्यों की वृद्धि होना सम्भव है और गर्भहत्या सर्वथा छूट जाती है। नीच पुरुषों से उत्तम स्त्री और वेश्यादि नीच स्त्रियों से उत्तम पुरूषों का व्यभिचाररूप कुकर्म, उत्तम कुल में कलंक, वंश का उच्छेद, स्त्री और पुरूषों को सन्ताप और गर्भहत्यादि कुकर्म विवाह और नियोग से निवृत्त होते हैं, इसलिए नियोग करना चाहिए।

प्रश्न- नियोग में क्या क्या बात होनी चाहिये?

उत्तर- जैसे प्रसिद्धि से विवाह, वैसे ही प्रसिद्धि से नियोग। जिस प्रकार विवाह में भद्र पुरूषों की अनुमति और कन्या-वर की प्रसन्नता होती है, वैसे नियोग में भी। अर्थात् जब स्त्री-पुरूष का नियोग होना हो तब अपने कुटुम्ब में पुरूष स्त्रियों के सामने-'हम दोनों नियोग सन्तानोत्पत्ति के लिए करते हैं। जब नियोग का नियम पूरा होगा तब हम संयोग न करेंगे। जो अन्यथा करें तो पापी और जाति वा राज्य के दण्डनीय हों। महीने में एकवार गर्भाधान का काम करेंगे, गर्भ रहे पश्चात् एक वर्ष पर्यन्त पृथक् रहेंगे।'

प्रश्न- नियोग अपने वर्ण में होना चाहिये वा अन्य वर्णों के साथ भी?

उत्तर- अपने वर्ण में वा अपने से उत्तमवर्णस्थ पुरूष के साथ अर्थात् वैश्या स्त्री वैश्य, क्षत्रिय और ब्राह्मण के साथ, क्षत्रिया क्षत्रिय और ब्राह्मण के साथ, ब्राह्मणी ब्राह्मण के साथ नियोग कर सकती है। इसका तात्पर्य यह है कि वीर्य सम वा उत्तम वर्ण का चाहिये, अपने से नीचे वर्ण का नहीं। स्त्री और पुरूष की सृष्टि का यही प्रयोजन है कि धर्म से अर्थात् वेदोक्त रीति से विवाह वा नियोग से सन्तानोत्पत्ति करना।

प्रश्न-पुरूष को नियोग करने की क्या आवश्यकता है क्योंकि वह दूसरा विवाह करेगा?

उत्तर- हम लिख आये हैं, द्विजों में स्त्री और पुरूष का एक ही बार विवाह होना वेदादि शास्त्रों में लिखा है, द्वितीय बार नहीं। कुमार और कुमारी का विवाह होने में न्याय और विधवा स्त्री के साथ कुमार पुरूष और कुमारी स्त्री के साथ मृतस्त्री पुरूष के विवाह होने में अन्याय अर्थात् अधर्म है। जैसे विधवा स्त्री के साथ कुमार पुरूष विवाह नहीं किया चाहता, वैसे ही विवाहित स्त्री से समागम किए हुए पुरूष के साथ विवाह करने की इच्छा कुमारी भी न करेगी। जब विवाह किये हुए पुरूष को कोई कुमारी कन्या और विधवा स्त्री का ग्रहण कोई कुमार पुरूष न करेगा तब पुरूष और स्त्री का नियोग करने की आवश्यकता होगी और यही धर्म है कि जैसे के साथ वैसे ही का सम्बन्ध होना चाहिए।

प्रश्न- जैसे विवाह में वेदादि शास्त्रों का प्रमाण है, वैसे नियोग में प्रमाण है वा नहीं?

उत्तर- इस विषय में बहुत प्रमाण हैं। देखो और सुनो-

कुह स्विद्दोषा कुह वस्तोरश्विना कुहभिपित्वं करतः कुहोषतुः।
को वां शयुत्रा विधवेव देवरं मर्य्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ।।
उदीर्ष्व नार्यभिजीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ।।२।।

ऋ०मं० १० सू०१८। मं०८।।

हे (अश्विना) स्त्री पुरूषो! जैसे (देवरं विधवेव) देवर को विधवा और (योषा मर्यन्न) विवाहिता स्त्री अपने पति को (सधस्थे) समान स्थान शय्या में एकत्र होकर सन्तानोत्पत्ति को (आकृणुते) सब प्रकार से उत्पन्न करती है, वैसे तुम दोनों स्त्री पुरूष (कुह स्विद्दोषा) कहां रात्रि और (कुह वस्तुः) कहां दिन में वसे थे? (कुहाभिपित्वम्) कहां पदार्थों की प्राप्ति (करतः) की? और (कुहोषतुः) किस समय कहां वास करते थे? (को वां शयुत्रा) तुम्हारा शयनस्थान कहां है? तथा कौन वा किस देश के रहने वाले हो? इससे यह सिद्ध हुआ कि देश विदेश में स्त्री पुरूष संग ही में रहें और विवाहित पति के समान नियुक्त पति को ग्रहण करके विधवा स्त्री भी सन्तानोत्पत्ति कर लेवे।

प्रश्न- यदि किसी का छोटा भाई ही न हो तो विधवा नियोग किसके साथ करें?

उत्तर- देवर के साथ, परन्तु देवर शब्द का अर्थ जैसा तुम समझे हो वैसा नहीं। देखो निरूक्त में-

देवरः कस्माद् द्वितीयो वर उच्यते। -निरू० अ० ३। खण्ड १५।।

देवर उसे कहते हैं जो विधवा का दूसरा पति होता है, चाहे छोटा भाई व बड़ा भाई, अथवा अपने वर्ण वा अपने से उत्तम वर्ण वाला हो, जिस से नियोग करे उसी का नाम देवर है।

(नारि) विधवें तू (एतं गतासुम्) इस मरे हुए पति की आशा छोड़ के (शेषे) बाकी पुरूषों में से (अभि जीवलोकम्) जीते हुए दूसरे पति को (उपैहि) प्राप्त हो और (उदीर्ष्व) इस बात का विचार और निश्चय रख कि जो (हस्तग्राभस्य दिधिषोः) तुम विधवा के पुनः पाणिग्रहण करने वाले नियुक्त पति के सम्बन्ध के लिये नियोग होता तो (इदम्) यह (जनित्वम्) जना हुआ बालक उसी नियुक्त (पत्युः) पति का होगा और जो तू अपने लिये नियोग करेगी तो यह सन्तान (तव) तेरा होगा। ऐसे निश्चय युक्त (अभि सम् बभूथ) हो और नियुक्त पुरूष भी इसी नियम का पालन करे।

– क्रमश :

धरोहर

६ दिसम्बर स्मृति दिवस पर विशेष :

आर्य समाज के मिशनरी उपदेशक–

श्री रामस्वरूप आजाद जी

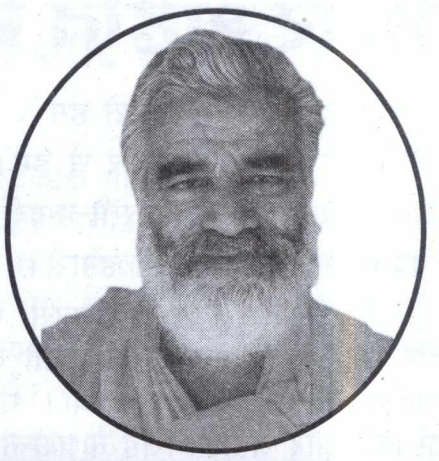

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ९८३७४०२१९२

आर्य समाज के उपदेशक का पुरूषार्थ उनकी तपस्या उनका समर्पण, उनकी आस्था और विश्वास जो आर्य समाज रूपी पौधे को विशाल वट वृक्ष बना दिया आज जिसकी छाया में बैठे आर्य नेता, अधिकारी फल–फूल रहे हैं अपने स्वार्थों में आर्य समाज की जड़ें खोखली और कमजोर कर रहे हैं उन जड़ों को सींचचे कि लिए उपदेशकों का पसीना और खून और जीवन खाद के रूप में लगा है उसे समर्पण का पानी देकर बढ़ाया है अब तो उसे मात्र सुरक्षित रखना है और उसकी छाया में बैठकर उसके फल खाने हैं हम इतना भी नहीं कर पा रहे हैं कितनी हमारी अवनति हो गई है यह एक विडम्बना ही कही जायेगी।

ऐसे ही समर्पित उपदेशक कार्यकर्ता योद्धा, सेनानी, के रूप में आजाद के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हुए जिन्हें राम स्वरूप आर्य के राम से ही जानते हैं। एक दिन मुझे उनके दर्शन करने का सौभाग्य हुआ नाम तो सुना था पर दर्शन नहीं हुए थे मिलने पर सुखद आश्चर्य हुआ मैंने पूछा आप आजाद क्यों लिखते हैं तब थोड़ी देर तक भावुक होकर कहीं खो गए और मेरी ओर देख कर बोले समय आने पर पता चल जायेगा। मत पूछो यही ठीक है। म० वेगराज आर्य भूड़िया वाले उनका सम्मान गुरूजी की तरह करते थे उनके ग्राम में २ दिन सम्मेलन था। वहां प्रथमवार उन्हें सुनने का अवसर मिला फिर आप गुरूकुल भी आये स्वामी शान्तानन्द जी ने विजनौर जिले के नारायण खेड़ी ग्राम में वेद पारायण यज्ञ का आयोजन कराया था। मुझे ब्रह्मा बनाया गया। म० नारायण स्वामी क्रान्तिकारी एवं म० रामस्वरूप आजाद जी भी वहां आये थे। आपने सुन्दर भजन सुनाये आप वीर रस के कवि और प्रचारक रहे हैं। उस क्षेत्र में पहलवानी का शोक है प्रत्येक ग्राम में युवकों और बछड़ों को शौक से पालकर बलवान बनाते रहे हैं।

सरपंच टीकम सिंह जी मुख्य संयोजक थे बोले महाशय जी आज रात को इतिहास हो जाये तब उन्होंने महाभारत के कुछ अंश सुनाते हुए चक्रव्यूह के रचने पर गुरू द्रोणाचार्य की चाल को वीर किशोर अभिमन्यु ने कैसे समाप्त किया अपने पिता आर्जुन द्वारा चक्रव्यूह भेदन की घटना को संगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया। इसमें करूण एवं वीर दोनों ही रस विद्यमान हैं। अपनी दादी कुन्ती से अभिमन्यु अशीर्वाद लेने जाता है उस समय दादी जी का उपदेश वर्णित किया था–

शेरों के शेर नरेश बेटे, सुन मेरा उपदेश बेटे।
तेरी मौसी के केश बेटे, खिचे सभा के बीच में।।
जा सुत बदला लेकर आना,
युद्ध में मत न पीठ दिखाना।
बाना कर ले लाल रंग का।
रखते रहना ख्याल जंग का।।
आग लगा दल बीच में,
मत करना कोई क्लेश बेटे।।
शेरों के शेर बेटे–सुन मेरा, उपदेश बेटे।।

जब यह पंक्ति गा रहे थे तब दोनों हाथों से हारमोनियम बाजा भी उठा लिया था, चेहरे पर जोश, वाणी में रोश था और लग रहा था कि आजाद जी स्वयं ही जंग में जा रहे हैं लोगों में अपूर्व उत्साह आया तालियां बजी और अभिमन्यु की जय–जय कार लोग करने लगे।

ऐसा प्रचार करते थे आपके कई शिष्य साथ रहते थे जिसमें छोटे सिंह, प्रहलाद सिंह मुख्य हैं वैसे श्री ज्ञानेन्द्र सिंह मोहन लाल आर्य, श्री सुरेन्द्र सिंह आजाद, म० मुख्यतार सिंह जी म० हरचरन सिंह, जगदेव हठीला आदि–आदि आपके शिष्य रहे हैं। आपकी एक बड़ी विशेषता थी कि सभी शिष्यों को घर पर रखकर भोजन खिलाना फिर सिखाना और उन्हें प्रचारार्थ साथ ले जाना उनका खर्चा करना फिर घर के लिए दक्षिणा देना यह परिवार वालों से ऊपर उठकर समाज सेवा करते थे।

स्वाभिमानी इतने थे कि उन दिनों छूआछात के समय आदि कोई आत्मीय सम्बन्धी यह कह दे कि तुम इन शिष्यों को साथ लिए फिरते रहते हो कुछ घर का कार्य भी देख लिया करो तभी उठकर चल देते थे प्रार्थना करने पर भी नहीं रूकते थे। बिजनौर मेरे व्यायाम प्रदर्शन को देखकर मुझे अपने ग्राम का निमन्त्रण दिया वहां भी विशाल कार्यक्रम था स्वामी भीष्म जी, म० बेगराज जी, जैसे–जैसे उपदेशक तथा मन्त्री उ०प्र० सरकार भी थे क्षेत्र की भारी भीड़ आई थी। मेरा व्यायाम प्रदर्शन एवं भाषण भी कराया था आज भी उस समय के लोग मुझे याद करते हैं ऐसा मोहन लाला आर्य उड़ीसा में बता रहे थे यह वर्ष १९८० के आस–पास की घटना है ६ दिसम्बर को आपकी पुण्य तिथि है उस पर प्रतिवर्ष उत्सव होता है प्रतिवर्ष बुलाते हैं, पर प्रभु कृपा नहीं होती एक बार जाने का मन है उस समय के कितने लोग हैं। जो मुझे अभी जानते हैं।

आपका ग्राम फिरोजपुर खुर्जा जेबर रोड़ पर जहांगीपुर के पूर्व दक्षिण दिशा में स्थित है सभी किसान उत्साही एवं धार्मिक है आपके यहां कार्यक्रम होने से भूतगढ़ी ग्राम में भी मेरा प्रदर्शन हुआ यह सब आशीवार्द भी आजाद जी का ही रहा जहां वे जाते तो युवकों को प्रेरणा देने के समझते थे कि यदि आचार्य जी का प्रदर्शन हो गया तो मेरा प्रचार और प्रभाव प्रभावशाली रहेगा ऐसा आपका प्रयास था आपने ग्राम–ग्राम में जाकर प्रचार किया ब्रजक्षेत्र में आपका यशोगान सभी आर्य जन करते हैं। आप मिशनरी भाव रखते थे। आपने अपने बाद आज तक उस परम्परा का निर्वहण कर रहे हैं। यह सबसे बड़ी बात है। आप द्वारा ब्रजक्षेत्र में जो आर्य समाजों की स्थापना करना पूर्व स्थापित को सक्रिय करना यह बड़ी बात थी उससे वे सफल हुए। आपने पाखण्ड के खिलाफ बहुत लिखा है और प्रचार भी किया है ग्राम में कहीं यदि कोई साधु पाखण्डी होता था तब आप अपने प्रचार में उसका खुलकर विरोध करते थे मुझे बिजलीपुर खेड़ा, निवासी म० मुख्त्यार सिंह आर्य भजनोपदेशक के भतीजे गम्भीर सिंह आर्य ने बताया कि हमारे ग्राम के निकट नहर किनारे एक आश्रम है, पूरे क्षेत्र में उनकी बड़ी प्रसिद्धि और प्रशंसात था श्रद्धा विश्वास है वर्ष में मेला भी लगता है, एक संस्कृत विद्यालय भी चलता है। उसके महन्त बाबा मुनि जी महाराज मोटे प्रभावी साधु संचालन करते हैं, एक दिन आजाद जी उधर गए तथा बातचीत में क्रोधित होकर महात्मा से बोले तेरे पेट में चिमटा घुमाकर सारी आतें और माल जो खा रक्खा है अभी बाहर निकाल दूंगा। इसे सुनकर उनकी शिष्य मण्डली क्रोधित होकर आजद जी पर हमला करने का प्रयास करने लगे महाराज जी ने अपने शिष्यों से कहा कि तुम अगर इनका अपमान करोगे तो इसका दुष्परिणाम अच्छा नहीं रहेगा ये आर्य समाज के उपदेशक हैं प्रत्येक ग्राम में इनके शिष्य सामान्य नहीं पहलवान् हैं। अतः मुझे जो कह रहे हैं ठीक हैं ये समाज सुधारक है पूज्य हैं नमन योग्य हैं आप इन्हें नमस्कार कर क्षमा याचना करो फिर शिष्यों ने वैसा ही किया ऐसे थे श्री आजाद जी वे वैदिक संस्कृति और आर्य समाज की धरोहर हैं उसकी हमे रक्षा करनी चाहिए।

आज उनका स्मरण करके उनके प्रति श्रद्धा के भाव जागृत होते हैं कि उन्होंने विषम परिस्थितियों में भी वेद प्रचार किया। आज हम सुविधाओं से युक्त होकर भी उतना नहीं कर रहे हैं आर्य समाज यदि आगे बढ़ा है उसमें आर्य भजनोपदेशकों का अपूर्व योगदान है। जिला सभा के अधिकारी, वेद प्रचार अधिष्ठाता ऐसे महानुभावों के घर पर जाकर उनके परिवार के प्रति आत्मीयता के भावों से उनकी कुशलता लेते रहेगें तो कड़ी जुड़ी रहेगी अन्यथा परम्परायें समाप्त हो जायेगी।

आज उनकी पुण्य स्मृति दिवस पर उन्हें सादर नमन करते हुए आर्य समाज को अधिकारियों से निवेदन करूंगा, इस विषय में विशेषांक ध्यान देकर गौरव शाली परम्परा की सुरक्षा करेगें।

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

–वेदारी लाल आर्य
हाता प्यारे लाल नगरा, झांसी

डरेंगे न पिस्तौल बार से हम
न पीछे हटे हैं धर्म के प्रचार से हम।
मिटेगी न सरस्वती से हमस्ती हमारी,
दबाने से होगी न पस्ती हमारी।

संवत् १९४१ के माघ मास था रविवार था। आर्य समाज बच्छोवाली का साप्ताहिक सत्संग चल रहा था। भाई दित्ता सिंह और जवाहर सिंह ने प्रसन्नता प्रकट करते हुए समाज में एक नवयुवक के प्रवेश की घोषणा की। नवयुवक ने अपने आन्तरिक सात्विक भावों से कहा हम सबके कर्तव्य और मन्तव्य एक होने चाहिए। जो वैदिक धर्म के एक, एक सिद्धान्त के अनुकूल अपना जीवन ढाल नहीं लेगा, उसको उपदेशक बनने का साहस नहीं करना चाहिए। भाड़े के टट्टुओं से धर्म का प्रचार नहीं हो सकता। इस पावन कर्म के लिए स्वार्थ त्यागी पुरूषों की आवश्यकता है। पंजाब के आर्य समाज के केन्द्र बिन्दु लाला सांईदास ने अपने मित्रों से कहा, देखो यह आर्य समाज को तारते हैं या डुबोते हैं। यह नवयुवक और कोई नहीं, वरन हमारे लाला मुंशीराम जी थे जो आगे चलकर स्वामी श्रद्धानन्द बने।

इनका जन्म फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी संवत १९१३ वि० को जिला जलन्धर के ग्राम तलवन में हुआ था। पिताश्री नानकचन्द्र जी उत्तर प्रदेश पुलिस में कोतवाल के पद पर थे। संवत् १९२३ में मुंशीराम का यज्ञोपवीत संस्कार होने के बाद उनकी अनियमित पढ़ाई शुरू हुई। पिता का स्थानान्तरण, काशी, मिरजापुर, बलिया, हमीरपुर, बांदा आदि स्थानों पर होते रहे। संवत् १९३५ में इलाहाबाद के म्योर कालेज से एम०ए० की परीक्षा दी। इसी मध्य मुंशीराम का विवाह संवत् १९३४ वि० जालन्धर के राव सालिगराम की पुत्री शिवदेवी के साथ हुआ। इसके पश्चात वह इलाहाबाद से बरेली आ गए। श्रावण १४, संवत् १९३६ वि० के दिन ऋषि दयानन्द के बरेली आगमन पर सभा के प्रबन्ध का भार इनके पिता कोतवाल नानक चन्द्र पर पड़ा। पहले दिन के व्याख्यान के पश्चात् अपने नास्तिक पुत्र के सुधार की आशा से पुत्र को कहा, बेटा मुंशीराम एक दण्डी सन्यासी आए है, वह विद्वान और योगिराज हैं। उनके वक्तव्य सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो जायेंगे। उस समय तक मुंशीराम अंग्रेजी उपन्यास पढ़कर तथा पिता के साथ विभिन्न शहरों में घूमकर पूर्ण नास्तिक हो चुके थे। यद्यपि केवल संस्कृत जानने वाले के मुख से बुद्धि की कोई बात की आशा न थी, परन्तु जाने पर पहल दस मिनट के व्याख्यान से ही उन पर विलक्षण प्रभाव डाला। फिर तो ऋषि के सत्संग में सर्वप्रथम उपस्थित होने वाले और सबसे अन्त में जाने वाले मुंशीराम ही थे। इस सत्संग ने इनके जीवन को बदलने में जादू का काम किया। इसके पश्चात इन्होंने वकालत की और सच्चे केस के माध्यम से ही अतीव ख्याति प्राप्त की।

संवत वि० १९४५ में शतरंज खेलने और हुक्का पीने का व्यसन भी दूर हो गया। संवत् १९४६ वि० वैसाखी के दिन अपने मित्र मण्डली की सहायता से मुंशीराम जी ने सद्धर्म प्रचारक पत्र को जन्म दिया। इस पत्र के द्वारा आर्य समाज अपूर्व सेवा की। सद्धधर्म प्रचारक स्त्री जाति की शिक्षा और उन्नति का प्रबल समर्थक रहा। इसके परिणाम स्वरूप जालन्धर में कन्या महाविद्यालय की स्थापना हुई। सन् १९०१ में अपनी कन्या अमतकला का विवाह डा० सुखदेव जी के साथ जाति के बन्धन को तोड़कर किया। इसमें आपको अपनी बिरादरी का काफी विरोध भी झेलना पड़ा।

हिमालय की घाटियों में मुंशी अमन सिंह जी द्वारा कांगड़ी ग्राम में प्रदत्त भूमि पर २१–२४ मार्च १९०२ को गुरूकुल कांगड़ी का प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में ही अपने दोनों पुत्र हरिश्चन्द्र और इन्द्र को गुरूकुल में प्रविष्ट कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया। अपना निजी पुस्तकालय एवं जालन्धर की कोठी गुरूकुल के अधिवेशन में गुरूकुल को भेंट कर दी। यह सब उस हालत में किया जबकि आप पर पच्चीस हजार का ऋण था, और आप गुरूकुल से अपने निर्वाह के लिए कुछ भी नहीं लेते थे। सत्रह वर्ष तक गुरूकुल के आचार्य और मुख्यधिष्ठाता रहे। आर्य सार्वदेशिक सभा के संगठन का श्रेय भी आपको ही जाता है। स्वामी जी संगठन का उद्देश्य विस्तृत ही नहीं पावन भी था।

उसमें साम्प्रदायिकता एवं द्वेष की गन्ध तक न थी। उनकी दृष्टि भारत के उज्जवल भविष्य की ओर थी। वह भारत को एक अखण्डित और महान शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिए अपना आन्दोलन चला रहे थे। यहा बात समय–समय पर उनके लिखे लेखों को पढ़ने से समझ में आ जाती है। एक अपील में उन्होंने लिखा था कि आर्य समाज के माने हुए वैदिक सिद्धान्त ऐसे व्यापक और स्वतः सिद्ध है कि उनका आचरण में लाना ही उनका प्रचार है। उन्हें वैदिक सिद्धान्तों की शक्ति पर विश्वास है। २३ दिसम्बर १९२६ दिन गुरूवार को स्वामी जी निमोनियां से पीड़ित थे। उकने पास लोगों के आने की मनाही थी। सीढ़ियों पर एक युवक आया तो सेवक ने रोक दिया। स्वामी जी ने आवाज सुनकर उसे बुला लिया। युवक ने पीने के लिए पानी मांगा। सेवक पानी लाने के लिए गया ही था कि उसने पिस्तौल से तीन फायर किए। सेवक धर्म सिंह ने सामना करना चाहा पर उसे भी एक गोली लगी। हत्यारा भागना चाहता था कि स्वामी के सेक्रेटरी धर्मपाल विद्यालंकार ने उसे दबोच लिया। पुलिस ने हत्यारे को गिरफ्तार कर लिया। प्रीवीकौंसिल तक मुकदमा चला पर उसकी फांसी की सजा बहार रही।

स्वास्थ्य पर विचारों का प्रभाव

संकलन– रणधीर शास्त्री

जब शरीर अस्वस्थ होता है, तब मन भी विकल और अशान्त हो जाता है। किसी शारीरिक व्यथा के उत्पन्न होते ही मानसिक व्यथा भी साथ ही उत्पन्न होती है। यह बात सबको विदित है। जैसे बाह्य शारीरिक अवस्था का प्रभाव मन पर होता है, वैसे ही मानसिक विचारों का प्रभाव भी शरीर और स्वास्थ्य पर होता है। इसी गंभीर तत्व को बहुत थोड़ो मनुष्य समझते हैं।

शारीरिक रोगों को दूर करने के लिए अनेक नवनी–नवीन चमत्कारिक औषधियों का आविष्कार होते हुए भी रोगों को प्रचार अधिक दिखाई देता है। रोग का मुख्य स्थान मन है और मन ही में रोग दूर करने की शक्ति है। सब रोगा को दूर करने का अद्वितीय साधन प्रत्येक मनुष्य के पास ही है, तथापि मनुष्य रोगों से पीड़ित रहते हैं। स्वास्थ्य पर विचारों का बड़ा प्रभाव पड़ता है। हमारे विचारों और इच्छाओं का प्रभाव शरीर के अवयावों और ज्ञान–तन्तुओं पर कल्पनाती रूप में पड़ता है। इस विषय का विचार कोई विरला ही करता है। बुद्धिमान लोग स्वास्थ्य तथा आनन्द की मात्रा बढ़ाने के लिए विचार–शक्ति का प्रयोग करने की विशेष सम्मति देते हैं और उत्साहित करते हैं, क्योंकि विचार मनुष्य के अधीन है, इससे मनुष्य को इनका उपयोग कर सदैव सच्चरित्र बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

यदि तुम्हारा मित्र दुःखी हो, तो तुम अपने मन में उसकी शुभ कामना करो। एकान्त में बैठकर बल और प्रसन्नता की लहरें उसके शरीर तथा आत्मा में भेजो। दूसरे के लिए अपने मन में शुभ–कामना का विचार धारण करने से अपने स्वास्थ्य तथा आनन्द की भी वृद्धि होती है। मनुष्य के शरीर पर विचार की लहरों का अवश्य प्रभाव पड़ता है, चाहे अच्छा हो या बुरा। इससे यदि तुम अपना स्वास्थ्य ठीक रखना चाहते हो, तो अपने विचारों को शुद्ध रखो, तभी उत्तम जीवन का लाभ होगा। यदि स्वास्थ्य की इच्छा हो, तो प्रथम अपने शरीर रूपी रथ को शुद्ध और पवित्र तथा स्वच्छ रखना चाहिए।

इस रथ के अति चंचल अश्व–रूपी इन्द्रियों को मन रूपी लगाम से बुद्धि सारथी द्वारा नियमित मार्ग से चलाया जाये, तो स्वास्थ्य प्राप्ति अवश्य हो सकती है, परन्तु यदि हम मन–रूपी लगाम को किंचित भी ढीली छोड़ देंगे, तो इन्द्रिय–रूपी अश्व शरीर–रूपी रथ को अनुचित मार्ग पर अवश्य ले जायेंगे। उससे हमारा स्वास्थ्य और ज्ञान तथा बल अवश्य नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। यही बात उपनिषदों में भी वर्णन की गई हैं।

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव च,
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च,
इन्द्रिययाणि हयान्याहुः विषयांस्तेषु गोचरान्।।

अर्थ– आत्मा को रथी जानो और शरीर को रथ बुद्धि को सारथी और मन रूपी लगाम से अपने अधीन करो, अर्थात्–इन्द्रिय रूपी घोड़े को मन–रूपी लगाम से बुद्धि–रूपी सारथी द्वारा इष्ट स्थान रूपी ईश्वर प्राप्ति अथवा स्वाभाविक जीवन है, परन्तु केवल शरीर की आरोग्यता पूर्ण स्वास्थ्य नहीं, किन्तु शरीर और मन तथा आत्मा तीनों की स्वस्थता ही पूर्ण आरोग्यता है।

प्रत्येक मनुष्य यह नहीं जानता है कि किस उपाय से ये तीनों आरोग्य रखे जा सकते हैं। जो इस बात को जानते हैं, वे बिना औषधि के अपने को आरोग्य रख सकते हैं।

वर्ममान काल की खोज से पता लगा है, कि रोगों की जड़ शरीर में नहीं, किन्तु मन और भावों में है। जब तक इन दोनों की शुद्धि न की जायेगी, तब तक रोग कदापि निर्मूल न हो सकेगा, रोग का सबसे बड़ा कारण रोगों की चर्चा करना है और सुनना है, इससे रोगी के विचार मन में पुष्ट होते रहते हैं और शरीर पर उनका धीरे–धीरे प्रभाव पड़कर शरीर निर्बल हो

शेष पृष्ठ ७ पर

जीवन-नौका को डूबने से बचाने के लिए ज़रूरी है ; उसे विकारों के भार से मुक्त रखना

– सीताराम गुप्ता

कभी–कभी किसी नाव में उसकी क्षमता से ज्यादा सामान लद जाता है तो वह नौका थोड़ा सा आगे बढ़ने के बाद ही डगमगाने लगती है और उसका सामन कम नहीं किया जाता तो उसके डूबने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसे में पानी की लहरों का एक थपेड़ा भी उसे डुबोने के लिए पर्याप्त होता है। ऐसी स्थिति में नौका को डूबने से बचाने के लिए उसमें लदे हुए सामान में से कुछ सामान उतार देना आवश्यक हो जाता है। यदि नौका धारा के बीचोंबीच पहुंच चुकी हो तो उसका भार कम करने के लिए अतिरिक्त सामान को वहीं बाहर पानी में ही फेंक दिया जाता है। सामान कम होने पर नौका के डूबने की आशंका नहीं रहती। अब प्रश्न उठता है कि नौका में लदे हुए सामान में से कौन सा सामान फेंका जाए और कौन सा नहीं?

यदि सारा सामान एक जैसा ही है तो कोई सा सामान भी बाहर फेंका जा सकता है लेकिन एक तरफ से नहीं बल्कि चारों तरफ़ से बराबर–बराबर मात्रा में ताकि नौका का संतुलन भी बना रहे क्योंकि यदि नौका में अधिकांश सामान या यात्री एक तरफ ही बैठ जाएंगे तो भी भार का असंतुलन होने से नौका के पलटने का पूरा–पूरा खतरा बना रहता है। बात हो रही थी कि अधिक सामान होने पर कौन सा सामान नौका के बाहर फेंका जाए? स्वाभाविक है कि उसी सामान को सबसे पहले बाहर फेंका जाएगा जो या तो बेकार अथवा अनुपयोगी हो या फिर सबसे सस्ता हो। कीमती सामान को तो हर हाल में अंत तक बचाने का ही प्रयास किया जाएगा। हमारी जीवन–नौका का भी न्यूनाधिक यही स्थिति होती है। वह भी जब डगमगाने लगती है तो उसमें लदा हुआ फालतू सामान या वजन भी उतार फेंकना जरूरी हो जाता है ताकि वह आसानी से अपने गंतव्य तक पहुँच सके।

अब प्रश्न उठता है कि हमारी जीवन–नौका में कौन सा सामान या वज़न फालतू हो जाता है जिसे उतार फेंकना जरूरी हो जाता है? कई बार हम स्वयं को निरर्थक मानसिक बोझ से युक्त कर लेते हैं अथवा हो जाता हैं। जीवन में चिंताओं का होना स्वाभाविक है लेकिन कई बार हम ऐसी निरर्थक चिंताएं भी पाल लेते हैं जिनका हमारे जीवन से कुछ लेना–देना नहीं होता। ये चिंताएं तनाव उत्पन्न करती हैं और तनाव हमारा जीवन दूभर कर डालता है। धीरे–धीरे तनाव बढ़कर मनोदैहिक व्याधियों के रूप में प्रकट होने लगता है जिसका भयंकर असर हमारे भौतिक शरीर पर होता है व भौतिक शरीर की व्याधियों का मन पर पड़ता है। ये एक ऐसा दुष्चक्र निर्मित हो जाता है जिससे छुटकारा पाना असंभव सा हो जाता है। यदि हम इन चिंताओं व उनसे उत्पन्न तनाव से मुक्त नहीं हो पाते तो ऐसी निरर्थक चिंताओं और तनाव का भार हमारी जीवन–नौका के संतुलित प्रवाह में व्यवधान उत्पन्न कर उसे आगे बढ़ने से रोक देता है।

चिंता ही नहीं जितने भी नकारात्मक विचार अथवा विकार हममें उत्पन्न हो जाते हैं वो सब हमारी जीवन–नौका को आगे बढ़ने से रोकने का ही कार्य करते हैं। इसके लिए जरूरी है कि हम अपने गुणों व दोषों का सही विश्लेषण करके व्याप्त दोषों से यथाशीघ्र मुक्त होने का प्रयास करें। साथ ही इस बात के प्रति भी सचेत रहें कि हमारे अवगुण तो चले जाएं लेकिन अच्छी आदतें व सद्गुण किसी भी तरह से कम ने होने पाएं। धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष ये चार पुरूषार्थ माने गए हैं। इन चारों का ही हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। किसी की भी उपेक्षा करने का सीधा सा अर्थ है जीवन में असंतुलन। इन्हीं के असंतुलन के कारण हमारी जीवन–नौका डगमगाने लगती है। जीवन रूपी नौका को डूबने से बचाने व उसे सही सलामत पार ले जाने के लिए दुर्गुणों से मुक्ति व कार्यों में संतुलन के अतिरिक्त अन्य कोई उपाया हो ही नहीं सकती।

ऐसी भी हैं वैदिक सिद्धान्तसिक्त सन्तानें

– प्रियवीर हेमाइना

सुप्रसिद्ध कर्मयोगी समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने निर्वाण से पूर्व ही जो सभा को दिया था उसमें उन्होंने जहाँ अन्य बातें लिखी थी वहाँ अपने अन्त्येष्टि संस्कार के बारे में भी स्पष्ट यह लिखा था–

"जैसे इस सभा को मेरी और मेरे सब पदार्थों की यथाशक्ति रक्षा और उन्नति करने का अधिकार है, वैसे ही उसे मेरे मृतक शरीर के संस्कार का भी है। वह न तो गाड़ा जाय, न जल–प्रवाह किया जाय और न जंगल में फेंका ही जाय। 'संस्कार विधि' में वर्णित वेद विहित विधि से वेदी बनाकर वेदमंत्रों सें शव को भस्म किया जाय! वेद–विरूद्ध कुछ भी न किया जाय। भस्म खेत में डाल दी जाय।"

महर्षि जी की उक्त इसी अभिलाषा के अनुरूप ही उकना अन्त्येष्टि संस्कार उनके भक्तों द्वारा किया गया था और उनके अस्थि– अवशेषों को अजमेर स्थित शाहपुरा के बाग की भूमि (खेत) में ही मृत्तिकासात् किया गया था।

ऊपर के इ उद्धरण को देने का अभिप्राय यह ही है कि जैसी विधि अपने अन्त्येष्टि संस्कार के विषय में आचार्य प्रवर श्री महर्षि दयानन्द जी महाराज ने लिखी थी, वैसी ही वैदिक विधि से अन्त्येष्टि संस्कार करना पूर्णतः सर्वश्रेष्ठ है। इसी विधि को व्यवहार–क्षेत्र में उतारना आज के समय में आवश्यक ही नहीं अत्यावश्यक है क्योंकि यही विधि बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने में सहायक बनेगी, ऐसी मेरी धारणा है। पर्यावरण को शुद्ध–स्वच्छ रखना हम सब ही का सामाजिक दायित्व है। पर्यावरण बचेगा तो हमारा अस्तित्व बचेगा, अन्यथा हमारा और हमारी आनेवाली पीढ़ी का विनाश निश्चित है। निकट भविष्य में पर्यावरण प्रदूषण के भयंकर परिणाम होंगे ही। पर्यावरण को शुद्ध तथा स्वच्छ बनाकर ही स्वस्थ एवं बलिष्ठ नागरिक सुखी, शान्त तथा आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

ऐसा नहीं कि, महर्षि जी द्वारा बताई गई विधि से अन्त्येष्टि संस्कार करने वाले आज नहीं हैं, हैं और अवश्य हैं, जिसका केवल एक ही उदाहरण देना पर्याप्त समझूंगा जिसकी जानकारी मुझे अर्थात् इन पंक्तियों के लेखक को है। अभी पीछे उत्तर प्रदेश राज्य के अन्तर्गत बागपत जनपद के उसी ऐतिहासिक स्थान "वारणावत" (बरनावा), जहाँ पाण्डवों को जलाने के लिए दुर्योधन ने लाक्षागृह बनवाय था, के पास फजलपुर सुन्दर नगर नामा गाँव में संस्थापित आर्यसमाज के मंत्री श्री विनोद कुमार आर्य के पूज्य पिता श्री आशाराम जी का अन्त्येष्टि संस्कार पूर्णतः वेद विहित विधि से ही आर्य सन्तानों ने १८ नवम्बर २०१६ को खेत में किया।

दाहकर्म के तीसरे दिन २० नवम्बर को आर्य पुरूषों ने खेत में जाकर चिता से अस्थि संचय कर, उसी खेत में अस्थि अवशेषों को गड्ढ़े में डालकर पार्थिव अंशों में तो विलीन किया ही वहीं श्रद्धापूर्वक एक पौधा भी आरोपित कर दिया जिससे जगत् का वातावरण शुद्ध होता रहे! भस्म भी खेत में ही बिखेर दी गई।

धन्य हैं ऐसी वैदिक सिद्धान्तसिक्त सन्तानें जो अपने सर्वश्रेष्ठ वैदिक सिद्धान्तों एवं परम्पराओं को व्यवहार–क्षेत्र में निष्ठापूर्वक उतार रही हैं और पर्यावरण के संरक्षण के सम्बन्ध में प्रेरणा की स्रोत भी बन रही हैं सो भी एक अच्छे पिता से मिले अच्छे संस्कारों के कारण से ही। किम् बहुना? अगर संस्कार–पद्धति के रहस्य को समझकर हर माता–पिता प्रण कर ले कि वे सन्तान में ऐसे ही संस्कारों का आधान करेंगे जिससे वे उनसे भी उत्कृष्ट– कोटि के हों, तो हर बीस–पच्चीस साल के बाद एक नई ही सुसंस्कृत पीढ़ी का, एक नये ही सुसंस्कृत युग का आगमन होगा ही। जैसी सन्तानें होंगी वैसा युग होगा ही। माता–पिता तथा समाज के मस्तिष्क को बदलकर ही हिटलर ने बीस बरस मात्र में ही एक अद्भुत सुसंस्कारी युवा–पीढ़ी का निर्माण कर दिया था। यह नई पीढ़ी उन ही विचारों, संस्कारों का मूर्त–रूप थी जो जर्मनी के एक कोने से दूसरे कोने तक एक लहर की तरफ ही बहने लगी थी।

काश! कहीं इस अपने आर्यावर्त्त देश में भी कश्मीर से कन्याकुमारी तक ऐसी ही सुसंस्क्कारी अद्भुत सन्तानें दिखाई पड़े और इसका जगद्गुरुत्व पुनः अपने वास्तविक और पुरातन स्वरूप में आ जाये। और वैदिक आर्य संस्कृति सभ्यता अपने पुरातन गौरवमय स्वरूप को धारण कर विश्व का पथ प्रदर्शन कर सके। ईश्वर हमारे राष्ट्रनायकों को इस सम्बन्ध में सुमति प्रदान करे– समीचीन वैसी ही जैसी कभी हिटलर महान् को प्रदान की थी।

मो० ७५०३०७०६७४

आवश्यकता है

गुरूकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर उ०प्र० (पिन कोड २५१३१६) को ३ संस्कृत विषय व्याकरण अथवा साहित्य में प्रशिक्षित आचार्य उपाधि प्रथम श्रेणी तथा दो आधुनिक विषय अध्यापक एक गणित एक अंग्रेजी विषय से प्रथम श्रेणी में एम०ए० प्रशिक्षित अध्यापकों की आवश्यकता है। वेतन राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान जनकपुरी नई दिल्ली के मानदेयानुसार रू० छानबे हजार (रू० ९६०००) वार्षिक है। जनवरी २०१८ तक सम्पर्क कर आवेदन करें।

बलदेव नैष्ठिक, प्रबन्धक

मो० : ९९९७४३७९९०

पृष्ठ १ का शेष

आर्यों का कुम्भ मेला....

के विचारों से आर्य जनता लाभान्वित हुई।

रात्रिकालीन सभा में गुरूकुल सम्मेलन के रूप में प्रतिदिन प्रभावशाली कार्यक्रम ब्र० द्वारा प्रस्तुत किए गए गुरूकुल के ब्र० का व्यायाम प्रदर्शन भी अत्यन्त प्रभावशाली रहा। यज्ञशाला में प्रातः यज्ञोपरान्त सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी एवं स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती दिल्ली का उपदेश हुआ। समापन सत्र पर पूर्णाहुति के समय वानप्रस्थ एवं सन्यास की दीक्षा प्रदान की गई तथा आचार्य बालकृष्ण जी की उपस्थिति में छत्तीसगढ़ के मुख्य मंत्री जी मुख्य अतिथि रहे, ठा० विक्रम सिंह जी की अध्यक्षता में विद्वत्सम्मान समारोह हुआ। श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, श्री दीनदयाल जी गुप्त, श्री सुर्दशन जी केन्द्रीय मन्त्री तथा डा० महावीर अग्रवाल पूर्व कुलपति उ०ख०वि०वि० हरिद्वार, आचार्य सुकामा, सुमेधा जी का भी उद्बोधन हुआ मनुदेववाग्मी प्रबन्धक, स्वामी व्रतानन्द जी, कोमल कुमार, कुं जदेव आचार्य चारों का पुरूषार्थ प्रशंसनीय रहा। स्वामी धर्मानन्द जी की तपस्या सफल हो रही है। आचार्य धनञ्जय देहरादून, जितेन्द्र पुरूषार्थी भोजन व्यवस्था पर नियंत्रण कर रहे थे। आचार्य विजयपाल जी गु० झज्जर भी शोभायमान रहे आर्यों का कुम्भ मेला अति प्रभावशाली रहा। यातायात की व्यवस्था सुन्दर थी विट्ठल राव जी हैदराबाद के अलावा स्वामी ब्रह्मानन्द जी कर्नाटक, महाराष्ट्र, बिहार, उ०प्र०, आसाम, नागालैण्ड पूरे भारत से पूर्व पण्डित सभी स्नातक बन्धु भी पधारे थे उत्साह प्रशंसनीय रहा।

योगेन्द्र जी खट्टर म० धर्मपाल जी आर्य एम०डी० एच० वालों के प्रतिनिधि के रूप में दिल्ली से पधारे थे आपने उनका सन्देश सुनाया तथा आर्थिक सहयोग भी संस्था को प्रदान किया। आवासीय व्यवस्था के लिए आचार्य राकेश कुमार जी एवं आचार्य कर्मवीर जी शास्त्री सदैव तत्पर रहकर अतिथियों का समय पर ले जना, लाने का पूर्ण ध्यान रख रहे थे। उड़ीया भाषा में साहित्य प्रचुर मात्र में था पुस्तकों का मेला एवं अन्य दुकाने भी इधर से गई थी जो सुसज्जित रही पानी प्रकाश की भी पूरी व्यवस्था रही। चौ० मित्रसेन जी का सिन्धु परम मित्र परिवार में से कै० अभिमन्यु जी एवं कै० रूद्रसेज जी के सुपुत्र माता मरमेश्वरी देवी जी नेतृतवकर अशीर्वाद प्रदान कर रही थीं। यज्ञशाला का भव्यनिर्माण एवं द्वारा के पास महापुरूषों की स्मृतियां सुरक्षित देख मन अति प्रसन्न हो रहा था साथ ही कन्या गुरूकुल आमसेना की ब्रह्मचारिणियों के साथ अन्य कई गुरूकुलों से आई ब्रह्मचारिणियों शोभायमान थीं स्वामी जी द्वारा संचालित अन्य संस्थाओं से भी छात्र/छात्राऐं शोभायमान थीं स्वामी जी द्वारा संचालित अन्य संस्थाओं से भी छात्र/छात्राऐं शोभायमान होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे थे विद्वानों में भारत वर्ष के मूर्धन्य विद्वान्, सन्यासी, आर्य नेता वहां पर उपस्थित रहे यह स्वामी जी के प्रति उनकी श्रद्धा और विश्वास का ही प्रतिफल दिखाई दे रहा था। बूढ़ी माताओं से पूछा कि मां तुमयहां क्यों आई हो? नंगे पैर–अर्धनग्न सी दयारक्षिता मां भावुक हो गई बोली बाबा का आशीर्वाद लेने आए हैं स्वागत करने वालों का भी उधर की परम्परा का एक नया तरीका देखने को मिला। गदाधारी हनुमान जी आकर्षक का केन्द्र रहे स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी की तपस्या स्थली आमसेना, तीर्थ स्थल बन गया उ०प्र० क विभिन्न जिलों से जो भी आर्य/अधिकारी वहां पहुंचते हैं मैं उन्हें भी साधुवाद देता हूं। जो आर्यमित्र की सूचना पर आपने उ०प्र० का प्रतिनिधि किया पूरे देश से आये सन्यासी वर्ग एवं सभी आर्य सज्जनों को जो तन, मन, धन से वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए कटिबद्ध होकर भारत निर्माण में संलग्न हैं उनके जीवन एवं परिवार की सुख समृद्धि के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ स्वामी जी के चरणों में नमन–बधाई।

संस्थापित–1885 ओ३म् फोन नं0–0522–2286328
श्रीमद्दयानन्दाब्द–193 कृण्वन्तो विश्वमार्यम् मो0नं0–9412744341

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ
का
वार्षिक बृहद् अधिवेशन

पत्रांक–508/वार्षिक बृहद् अधिवेशन–2017–18/ लखनऊः दिनांक–29 दिसम्बर,2017

सेवा में,

सम्माननीय सभा पदाधिकारीगण, अन्तरंग सदस्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तरंग सदस्य, सभी आर्य समाजों, जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं अन्य आर्य संस्थाओं के माननीय प्रतिनिधिगण।

महोदय नमस्ते,

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक 28 जनवरी,2018 दिन रविवार (माघ शुक्ल एकादशी) को प्रातः 11.00 बजे से प्रधान/का0 प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह की अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, नारायण स्वामी भवन, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि नियत तिथि, समय व स्थान पर पहुँचकर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

विषय सूची

1– उपस्थिति।
2– ईश प्रार्थना।
3– गत साधारण सभा की कार्यवाही की सम्पुष्टि।
4– का0 प्रधान व सभा मन्त्री द्वारा प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
5– वार्षिक वृत्तांत 1 अप्रैल,2016 से 31 मार्च,2017 पर विचार व स्वीकारार्थ।
6– 01 अप्रैल,2017 से 31 दिसम्बर,2017 तक आय–व्यय स्वीकारार्थ।
7– आगामी वर्ष 2018–2019 का अनुमानित आय–व्यय स्वीकारार्थ।
8– आय–व्यय लेखा परीक्षक की नियुक्ति पर विचार।
9– का0 प्रधान अथवा अन्तरंग सभा को भेजे गए विषय/प्रस्ताव पर विचार।
10– अन्य विषय का0 प्रधान जी की अनुमति से।
11– दिवंगत आर्य बन्धुओं के प्रति शोक श्रद्धांजलि प्रस्ताव।

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा मन्त्री
मोबाईल–09837402192

पृष्ठ १ का शेष

आर्य समाज अमरोहा द्वारा रजाई .....

पिता अमरोहा रत्न प्रसिद्ध समाज सेवी म० सत्यप्रकाश आर्य के जन्म शताब्दी के रूप में यज्ञ किया गया। वेदपाठ कन्या गुरूकुल च्योटीपुरा की ब्र० द्वारा किया गया।

यज्ञ में मुख्य अतिथि शिक्षक विधायक श्री जयपाल सिंह व्यस्त रहे तत्पश्चात् हरिश्चन्द्र आर्य की अध्यक्षता में नगर पालिका चेयरमैन श्रीमती शशी जैन जी का हार्दिक अभिनन्द किया गया। श्री फूलसिंह पूर्व न्यायाधीश विशिष्ट अतिथि रहे आर्य समाज अमरोहा ने रजाई वितरित की सभा मन्त्री जी ने म० सत्य प्रकाश जी आर्य एव वीरेन्द्र आर्य को आर्य जगत के जाज्वल्यमान नक्षत्र बताया जो अमरोहा की पहिचान थे। नगर के मनोहर लाल आर्य, उषा आर्या सहित कई लोगों ने उनके संस्मरण सुनाये। डा० अशोक आर्य ने संयोजन किया।

कार्यक्रम में नत्थू सिंह आर्य तथा अन्तरंग सदस्य भी राजनाथ गोयल ने सभी का धन्यवाद किया आशा आर्या, तेजपाल शास्त्री ने यज्ञ व्यवस्था में संयोजन किया कार्यक्रम में चेतराम आर्य धनौरा के अलावा देहात से भारी संख्या में आर्य उपस्थित रहे, तथा अंकुर आर्य, राजेन्द्र आर्य, वीरेन्द्र आर्य, दिनेश आर्य आदि–आदि उपस्थित रहे।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

24 दिसम्बर रविवार को– जिला आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज हापुड़ के द्वारा आयोजित मन्दिर प्रांगण में यज्ञ के पश्चात् श्री घनश्याम प्रेमी जी के भजन हुए तथा स्वामी अखिलानन्द जी क्रान्तिकारी गुरूकुल पूठ का प्रवचन हुआ अध्यक्षता डॉ० विकास आर्य ने की संयोजन श्री विजेन्द्र आर्य ने किया। जिले की समाजों के प्रतिनिधियों एवं विद्यालयों में भारी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम में आ० प्रेमपाल शास्त्री, आनन्द प्रकाश आर्य, नरेन्द्र आर्य, बाबू सुरेन्द्र सिंह, ओमदत्त आर्य, अशोक आर्य मन्त्री, ज्ञानेन्द्र चौ० ऋषिपाल आर्य, नरेन्द्र चौधरी, सुन्दर लाल आर्य, सुरेन्द्र गुप्ता, राजपाल आर्य, अमर पाल आर्य, अधिष्ठाता माया आर्या, अलका आर्या, वीरेन्द्र सिंह, जितेन्द्र खैय्या, जगवीर सिंह, कुंवर पाल आर्य, रघुवीर सिंह, पवन मास्टर जी आदि–आदि कार्यकर्त्ता अधिकारी उपस्थित रहे।

24 दिसम्बर रविवार को– आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद की ओर से रामलीला मैदान में बलिदान दिवस मनाया गया सन्यास आश्रम से शोभायात्रा प्रारम्भ होकर मैदान में समापन हुआ। स्वामी चन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में विद्वानों के उपदेश हुए पूरे जिले से भारी संख्या में लोगों का उत्साह दर्शनीय रहा।

25 दिसम्बर सोमवार को गुरूकुल महाविद्यालय पूठ में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस एवं स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती का जन्म दिन मनाया गया। यज्ञोपरान्त भजन एवं सत्संग का आयोजन हुआ म० जगपाल सिंह, ब्र० दयानन्द शास्त्री प्रमोद आचार्य के विचारों से आर्य जनता लाभान्वित हुई संयोजन स्वामी अखिलानन्द जी ने किया अध्यक्षता स्वामी जी ने की आचार्य राजीव जी आचार्य कुलदीप जी ने यज्ञ सम्पन्न कराया आचार्य दिनेश जी एवं प्रदीप शास्त्री ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। व्यवस्था में मुख्य रूप से आचार्य सुधीर कुमार जी, आचार्य हर्ष देव जी, आचार्य तिवारी जी, सन्दीप शास्त्री रहे भोजन व्यवस्था श्री भीष्मदेव आर्य गजरौला की ओर से रही।

निरंजन सिंह शास्त्री,
अधिष्ठाता वेद प्रचार, हापुड़

मुरादाबाद–आर्य समाजगंज, स्टेशन रोड, मा० ज्ञानेन्द्र गांधी जी उपप्रधान– आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के सतत प्रयास से श्री विनय आर्य लोहिया के सौजन्य से आर्यसमाज स्टेशन रोड़ गंज मुरादाबाद में निर्धन एवं कमजोर वर्ग के लोगों को जोड़ से बचाने के लिए रजाई वितरण कार्यक्रम किया गया जिसमें लोगों को रजाइयां वितरित की गई।

रमेश आर्य, अन्तरंग सदस्य
आर्यप्रतिनिधि सभा, उ०प्र०, लखनऊ।

आर्य समाज खुर्जा बुलन्दशहर में स्वामी श्रद्धानन्द जी बलिदान दिवस मनाया गया।

रविवार, दिनांक २४ दिसम्बर २०१७ को आर्य समाज खुर्जा, बुलन्दशहर में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी के बलिदान दिनांक २३ दिसम्बर २०१७ पर प्रकाश डालते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ के प्रधान/का० प्रधान–डॉ० धीरज सिंह ने आर्य सामज खुर्जा के सदस्यों एवं सभासदों को सम्बोधित करते हुए अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित किया। इस अवसर पर आर्य समाज खुर्जा के प्रधान श्री धनश्यामदास, मन्त्री श्री रामस्वरूप सिंह आर्य एवं आर्य कन्या इण्टर कालेज, दयानन्द विद्यालय एवं आर्य कन्या डिग्री कालेज की शिक्षिकाओं ने स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के दिनचर्या पर प्रकाश डाला। डॉ० धीरज सिंह ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की दिनचर्या का अनुकरण करते हुए हम सभी को सच्चे देशभक्त बन राष्ट्र सेवा करनी चाहिए तथा आर्यत्व का परिचय देना चाहिए।

पृष्ठ ४ का शेष

स्वास्थ्य पर विचारों ....

जाता है, इससे सदा आरोग्यता के विचार *आरोग्यता बढ़ाने वाले होते हैं।*

संसार की कोई वस्तु दुःखदायक नहीं है, इस वाक्य का निरन्तर जप करो। जब तक इसका प्रभाव तुम्हारे मन पर जम न जाये, आरोग्यता के लिए बाह्य साधनों की आवश्यकता नहीं। अनोग्यता और समग्र सुख विचारों की शक्ति के ज्ञान और प्रभाव अपने आप आकर्षिक और प्राप्त हो सकते हैं। हम अपनी अज्ञानता तथा बुरे विचारों से भी क्लेश उठाते और दुःखी होते हैं और दूसरों को दुःखी करते हैं।

एक स्त्री सदा रोग का ही विचार और भावना करती थी। थोड़ा सामान्य रोग होने पर भी उसे बढ़ाकर कहा करती थी। मैं रोगी हूँ, यह दिखाने के लिए बार बार उद्योग करती थी, क्योंकि उसका यह स्वभाव पड़ गया था, इससे उसके मुहल्ले में भी कोई वैद्य आता, तो उसे नाड़ी दिखाती और वृद्धों के सामने रोया करती। वे भोले–भाले मनुष्य उसके दुःख में सहानुभूति दिखलाते, इससे उसको सन्तोष होता और अपने कल्पित दुःख की बाते करने में उसे सुख सा मिलता। ऐसा करते–करते उसका यह स्वभाव ही पड़ गया। थोड़े से रोग को बढ़ाकर कहती, मार्ग चलने में बहुत थकावट दिखाती, मुंह बनाना, धीरे–धीरे चलना इत्यादि रोगी के चिन्ह दिखाती, किन्तु ये सब बातें किसी रोग के कारण न थी, वरन् मन की निर्बलता से ही उसका ऐसा स्वभाव पड़ गया था। परन्तु, इसका क्या परिणाम होगा, इसकी उसे खबर न थी। फिर उसके लड़के भी संग–दोष से उसी से स्वभाव के हुए। इससे उसको बुढ़ापे में बहुत दुःख भोगना पड़ा। उसका प्रभाव केवल उसकी सन्तान पर ही नहीं पड़ा, किन्तु उसके पड़ोसियों पर भी बड़ा प्रभाव पड़ा, क्योंकि स्त्रियों को नकल करने का बड़ा भारी चाव होता है। ऐसे ही महामारी के रोग से जितने मनुष्य मरते है, उससे अधिक महामारी के भय से मरते हैं। अतः सज्जनों! बुरे विचारों से बड़ा भारी हानि होती है, इससे कभी किसी प्रकार बुरा विचार मन में न आने दो, इस बात का पूरा–पूरा ध्यान सदा रखो।

जो सदा दुःख के विचार करते हैं और कभी आनन्द के विचारों की एक रेखा भी नहीं देखते, वे अपने शरीर का नाडि–जाल वैसा ही बनाते है, क्योंकि नाड़ि जाल उन्हीं विचारो से बनता है। इससे विचारों का अच्छा बुरा प्रभाव पूर्णतया नाड़ियों पर निरन्तर पड़ता है। यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि शरीर केवल निर्जीव यन्त्र और आत्मा का गृह है। आत्मा के होने से ही काम कर सकता है, नहीं तो मिट्टी का ढेर है। यदि तुम आरोग्य चाहते हो तो आरोग्य औषधि की बोतलों से नहीं मिल सकती है। बाहर घूमना घर में रहने से उत्तम है, परन्तु सबका कारण पूर्व किये हुए विचार ही हैं। मन के विकारों का प्रभाव शरीर के भिन्न– अवयवों पर बहुत भयंकर रूप में पड़ता है। जैसे क्रोध करने से भूख मारी जाती है, रक्त–प्रवाह अव्यवस्थित हो जाता है और सारे शरीर में विकार फूट निकलता है, शोक और चिन्ता से शरीर का नाश हो जाता है। मधु प्रमेह का कारण विशेषतः यही है, अर्थात् क्रोध और चिन्ता ही है। जो कुछ होता है वह विचार–शक्ति की शिथिलता से ही होता है। इससे विचार–शक्ति को बलवान् बनाना चाहिए। भय, चिन्ता, आदि वृत्तियों का वेग चित्त को अस्थिर कर देता है, और हृदय की धड़कन को तीव्र करता है, जिससे नाड़ी–नाड़ी में विकार उत्पन्न हो जाता है। मन को एक स्थान पर लगाने के लिए श्रद्धा ही मुख्य उपाय है और भय तथा क्लेशों से बचने का उपाय अन्यर्यामी परमात्मा की शरण जाना है।

यदि हृदय अनियमित रीति से धड़कता है, तो इसी से शक्ति क्षीण होती है। जैसे शोक और भय स्वास्थ्य को बिगाड़ते हैं, वैसे ही प्रसन्नता, निभयता और उत्साह चिरजीवन को बढ़ाते हैं और नियमित रीति हृदय के धड़कन के चिन्ह हैं। यदि कोई विरोधी विचार मन में उत्पन्न हो, तो उसे तत्काल निकाल कर मन को श्रद्धा और उत्तम विचारों में प्रवृत्त करना चाहिए। इस प्रकार मन को अपने वश में करने से अपनी शक्तियों को शीघ्र ही जागृत कर सकते हो।

हमारे प्रत्येक विचार की शुद्धता औ अशुद्धता का निर्णय इसी से करना चाहिए कि हमारे रक्त की गति पर उसका क्या प्रभाव पड़ रहा है। जिसका जैसा कारण होगा, उसका कार्य भी वैसा ही होगा। संसार में कार्य कारण का नियम बड़ा प्रामाणिक है।

रक्त बीज की गति ठीक रहने से शरीर का स्वास्थ्य ठीक समझना चाहिए, क्योंकि जिस भाग में रोग होता है, उस भाग का रक्त बिगड़ जाता है। आकस्मिक शोक, भय, हर्ष तथा साहसन के कारण हृदय की धड़कन में भेद हो जाता है। कभी–कभी धड़कन बन्द भी होती है।

यदि तुम क्रोध, मान, माया, लोभ, ईर्ष्या या अन्य किसी वासना के अधीन रहते हो और उत्तम स्वास्थ्य की इच्छा करते हो तो, यह असंभव है। ऐसा कदापि नहीं हो सकता कि तुम नीच विचार करो और तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहे।

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....

आर्य समाज अमरोहा के कार्यक्रम में सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी उद्‌बोधन करते हुए तथा अन्य कार्यक्रमों की कुछ झलकियां ....

आर्य समाज अमरोहा के कार्यक्रम में सभा मंत्री उद्‌बोधन करते हुए, तथा यज्ञ में भाग लेते हुए आर्य जन

आर्य समाज के द्वारा लोहिया मानव ट्रस्ट में सभा उपप्रधान श्री ज्ञानेन्द्र गांधी जी द्वारा निर्धनों में रजाई वितरण के कार्यक्रम में

गुरूकुल आमसेना की स्वर्ण जयन्ती समारोह में स्वामी धर्मानन्द जी के साथ डॉ० सोमदेव शास्त्री, स्वामी आर्यवेश जी, एवं स्वामी प्रणवानन्द जी

गुरूकुल आमसेना की स्वर्ण जयन्ती समारोह में स्वामी धर्मानन्द जी का स्वागत करते आमसेना (उड़ीसा) के आर्य जन।

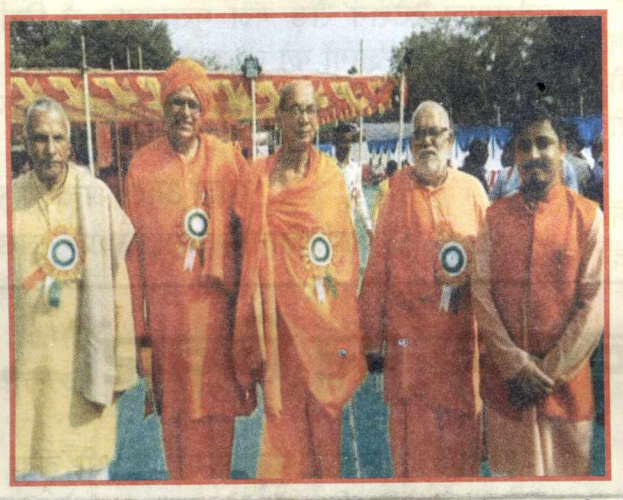

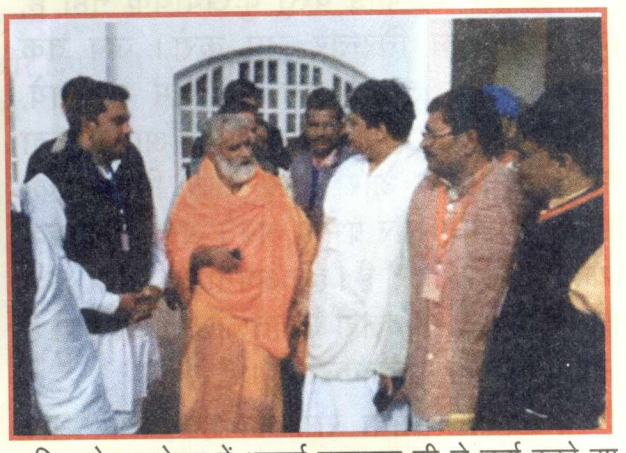

विश्व वेद सम्मेलन में आचार्य बालकृष्ण जी से चर्चा करते हुए सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी एवं आचार्य दिनेश जी

कुदरत ने नहीं दिए हाथ, हौसलों से उड़ाया विमान

(लखनऊ): वह बिना हाथों के पैदा हुई थी, लेकिन उन्होंने खुद को बेबस नहीं माना। आज वह दुनिया की पहली ऐसी महिला है जो सिर्फ पैरों से विमान उड़ाती है। उन्होंने ताई क्वांडो में ब्लैक बेल्ट हासिल किया है। अब वह अपने पति के साथ दुनियाभर में घूमकर शारीरिक चुनौतियों का सामना कर रहे लोगों को प्रेरित करती है।

अमेरिका के एरिजोना की ३२ वर्षीय जेसिका कॉक्स को देखकर कोई भी अंदाजा नहीं लगा पाता कि वह हाथ नहीं होने के बावजूद तमाम काम वैसे ही करती है जैसे कोई हाथ वाला इन्सान। उन्होंने अपने पैरों को ही हाथ बना लिया। बचपन में उन्हें बनावटी बाहें दी गई थीं ताकि वह आराम से चल सकें। लेकिन कॉक्स को वे नहीं भाए। उन्होंने ठान लिया कि वह पैरों से ही वे सारे काम करेंगी जिन्हें कोई दूसरा हाथ से करता है।

उन्होंने तमाम कामयाबियां हासिल करने की भी संकल्प किया जिन पर कोई भी गर्व कर सकता है। कॉक्स कहती है, अस्थि मांस में स्पर्श की जो योग्यता है उसका कोई विकल्प नहीं हो सकता, मगर मेरे पैरों में यह योग्यता है। साल २००८ में कॉक्स ने गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड बनाया जब उन्होंने पायलट के रूप में विमान उड़ाने का लाइसेंस पाया।

वह पहली ऐसी महिला बनीं जो सिर्फ पैरों से विमान उड़ाती हैं। वह बिना हाथों वाली पहली महिला हैं जिन्होंने अमेरिक ताई क्वांडो एसोसिएशन से ब्लैक बेल्ट पाया है। वास्तव में उन्होंने कर दिखाया है कि उनकी शारीरिक चुनौती उनके लिए कभी बाधा नहीं बन सकती।

उन्होंने कहा, स्वाभाविक रूप से लोगों ने मुझे बिना हाथों के देखा तो इसे उन्होंने मेंरी कमी समझा, लेकिन मैं उन्हें गलत साबित करने पर आमादा थी। कॉक्स ने कहा, तीन साल में मैं जिमनास्टिक्स में शामिल हुई, छह साल में डांस सीखने लगी, मॉडलिंग किया, पांच साल में तैरने लगी, १० साल में मैं ताई क्वांडो कर रही थी। मैंने वह हर काम किया जो आप सोच सकते हैं।

: हरीश कुमार शास्त्री

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।